TECHE
UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4438**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

॥अथसेत्रुंजारोरासलिख्यते॥दूहा॥ श्रीरीसहेसरपायनमी॥आं
णीमनआंणंद॥रासभणुंरलियामणो॥सेत्रुंजनोसुषकंद॥१॥सं
वतच्यारसतोतरइ॥श्रीधनेसरसूरि॥तिणसेत्रुंजेमाहात्मकह्यो॥सै
लादित्यहजुर॥२॥विरजिणंदसमोसर्‍या॥सेत्रुंजऊपरजेम॥इंद्रा
दिकआगलकह्यो॥सेत्रुंजमाहातमएम॥३॥सेत्रुंजातीरथसारिषो॥न
हबेतिरथकोय॥स्वर्गमित्युपातालमे॥तीरथसगलाजोय॥४॥नां
मेनवनिधसंपजे॥दीवांदुरीतपुलाय॥भेटंतांभवभयटलै॥सेवंतां
सुषथाय॥५॥जंबुनामेदीपरा॥दषणभरतमझार॥सोरठदेससुहं
मणो॥तिहांबेतीरथसार॥६॥ढाल॥१॥रागरामगिरी॥ढालपहलि ॥१॥
नयरीद्वारामतीकृष्णनरेस॥एदेसी॥॥सेत्रुंजोने श्रीपुंडरीक॥२
सिद्धक्षेत्रकंचनगिरि॥विमलाचलनेकरूंप्रणाम सेत्रुंजानाइ॥ 1

श्री श्रीसरस्वतीमातानीसायनमः॥

कवीसनाम॥२॥सुरगीरीन।महागीरी॥पुण्यरासि॥श्रीपदपर्वतइ
इ प्रकासी।महातिरथ।पुर्वेसविकांमसे०॥स्वास्वतोपर्वतनेंइछ्या
श।मुक्त निलोतिणकीजेंनक।बफदंतमहापद्मसुगंमसे०।इश्रवीवी
बसुमहकेवास।पातालमूलअकमकवास।सर्वकांमदाकीजेगुणयं
म०॥सेत्रुजानामकलाइकवीसनाम।जपजेंबेगअवलेगांम।सेत्रुंजेजा
तानोफलजदें।श्रीमहावीरसमवंतइमकहें।५।इला॥सेत्रुंजोपहिलेआ
रे।असियजोयणपरमांण।पहिलोप्रलेंकांचपणी।छविसजोयणजांण
।सत्तरीजोयणजांणवो।बीजेआरेवीसाल।वीसजोयणऊंचो कयो।घु
जसंल।त्रिकालजस।पावजोयणत्रिजेआरे।पक्षलोतीरथराय।सो
लजोयणऊंचोसही।मांनथकंखितलाय।२।पचासजोयणपक्षलपणें
वोथेआरेमजार।ऊंचोदसजोयणअवल।नीतप्रणमेंनरनार।४।बा

रजोय गणंधव मे आरे। मुल्नतणो विस्तार। दोजोयणकंचो अवे॥
सेत्रुंजो तीरथसार ५ सालिदाध्यव्रते आरे। पिछुलो परखलतर
द ज्ञवाह्योस्यसोम्बजव सा ससतो तीरथराज ६। ढाल २ जिनवरी
ने [illegible] ॥ [illegible] ॥ राग आसावरी॥ केवलग्यानी
प्रमुख तिरथंकर। अनंतसीधाइणगामोरे। अनंतवलि सिज
स्यइणठाम ॥ लिणकरुंनि तयरणामरे॥१॥ सेत्रुंजसाधु
अनंता सिधा। सिकसे वलिय अनंतरे॥ तिणसेत्रुंजो तिरथ
[illegible] तेगमनविासकरुंतरे। से० २। फागुणशुद आठमने।
दिवसे। रूषभदेवसुषकाररे। रायणरुंष समोसस्या [illegible] स्वामि
पुरवनीनांणवाररे। से० ३। भरतपुरवे त्रिभुवनमदिवस॥ इणसे ॥२॥
त्रुंजआयरे। पांचकोड संघुंडरिक सिधा॥ तिणपुंडरीक कदा॥
गीर।

यरे। से० ४। नमीवीनमीनांमे विद्याधर। बेबेकोड संघातरे। फागुण
शुद दसमीदीनसीधा तीणशणसुपरखातरे। से० ५। चवे चमासव
दीवदसदीवसे। नमीपुत्रीचवनस [illegible] विरे। अणसणकरिसेत्रु
जेगीरीउपर॥ तिसडु सिधाणक विरे। से० ६। वीतराव थ मतिर्थं ३
केरा॥ द्रावीडनेवारीवीलरे। कातीशुदपुनम दिन सिधा। दस कोड
मुनिसहुसे॥ से० ७। पंचेपांडवइणगिरसीधा॥ नवनारद रूषि
रायरे। संवप्रधुमनगया तिहांमुगते॥ आठे करम षपायरे। से० ८॥
नेमविनातेवीसतीर्थंकर। समोसस्या गीरीसंगरे। अजित सांति
तीर्थंकर बेउं। रह्याचोमासोरंगरे। से० ९। सहससाधु परीवार।
संघाते। थावच्चासुत सुखकाररे॥ पांचसे साधसुसेलग मुनीवर॥
सेत्रुंजे सिवपुर [illegible] रे। से० १०। असंख्यमाछुनी सेत्रुंजे सीधा॥ न ३
रतेसर नपाटरे। रांम [illegible] भरतादी [illegible] सीधा। [illegible] कर जोहरि

सं०॥ मुगततणी एवा वरे से० ॥ १९ ॥ जावड जिन नवयालि ॥ पुंडबसा
मुनी को मारे । संघ अनुतासेत्रुंजे ... करजोमारे । से० २२ ॥ १
॥ दाल ३ वलन्सूईनी ॥ सेत्रुंजानो कहुं सो जगमाद । तेसकु गाज्यो सकु
कोसुविचार । सुणतां आणद अंगनमाय ॥ जनमजनमरा पात
कजाय ॥ १ ॥ रिषबदेव अजोध्यापुरी । समोसस्या स्वामी हीतधरी
नरत गयो वांदणनकाज । उपदेस दीयो जीनराज ॥ २ ॥ जग
माहे मोटो अरीहंतदेव । चउसठ इंद्र करे जस्कु सेव । तेहथि
मोटो संघ कहिवाय ॥ जेहने पणमे अरिहंतराय ॥ ३ ॥ तेहथि मोटो ॥ ३ ॥
संघवी कह्यो ॥ नरत सुणी मन गह गह्यो । नरत कहे ते किम पामी
ये ॥ प्रभु कहे सेत्रुंजे जात्रा कीये ॥ ४ ॥ नरत कहे संघ विध प्रभु ग । तेड
पोकुं अंगनजुज । इंद्रे आण्या अतबास । प्रभु आपे संघवी पद
दतास ॥ ५ ॥ इंद्र ईत्नीणदेवो तातकोला । नरत सुणी ... ने मास

॥ पेरूरावीधरसंचेहीया । सबरसो नारथ आपीयो ॥ ६ ॥ रिषबदेव
नी पुत्री मावली । रतननतणी कीधी मनरली ॥ नरते गणधर तैयर
तेडीया । सांतीक पौष्टिक सकु तीहां कीया ॥ ७ ॥ कंकोत्री मुकी स ॥ २
कुदेस । नरत ते आव्यो संघ असेस ॥ आयो संघ अजोध्यापुरी प्र
थमतीर्थंकर जात्रा करी ॥ ८ ॥ सिधगनगत की ध्री अतिघणि ॥ सिध
वलायो सेत्रुंजा तणी । गणधर बाहुबल केवलि ॥ मुनीवर कोडी
साथे लीया वलि । एव रुवर्णनी सगलीरीद्ध । नरते साथे लीधी
सीधि ॥ हयगयरथपायक परीवार । तेतो कहतां नावे पार ॥ १० ॥ न
रते सर संघवी कहवाय ॥ मारग चैत्य नधरतो जाय । सी अव्यो
सेत्रुंजा पास । सकुनी पुगी मननी आस ॥ ११ ॥ नयणे नीरख्यो सेत्रुंजो
राय । मणि मांणक मोत्यां सुं वधाय । तीणठाम ... कीयो न
रते आणंद आंगने पूरवासीयो ॥ १२ ॥ संघ सेत्रुंजा उपर चढ्यो । फरस

॥ तो घातीकर्म खपइ इण ठाम। केवलनांणी पांम्या तिहां घणा भेरा
मुणसंघवैजिहां॥१३। केवलज्ञानी स्वाउनी भक्त। इसानेइ अं
णसण करी विमल नदी सेत्रुंजानी सोहामणी। भरतेदीठी कोतिक
तणी॥१४। गणधरदेव तणे उपदेस। इंद्र वलि दीधो आदेस। श्री
आदिनाथ तणो देहरो भरत करायो गीरीसेहरो १५ सोनानो॥
श। सोवनतंग। रतनन तणी प्रतमा मनरंग। भरतेश्री आदीसर तणी।
प्रतमा थापी सोहामणी॥१६॥ मरुदेवीनी प्रतमा वली। माहि गुन
मथापी रली। बांभीसुंदरी प्रमुख प्रसाद। भरतेथाप्या नव नाना॥
द१७। इम अनेक प्रतिमा प्रसाद। भरत करायो गुरु सुप्र[illegible]सा
द। भरत तणो पहीलो उधार। सगलो इ जांण संसार॥१८॥ ढा
ल४ जिवभाखे जीन धर्म कीजीये एदेसी॥ भरत तणे पाट आगम ४

॥ दंडवीरज पाट थोरायोजी। भरत तणी परसंघ कीयो। सेत्रुंजे संघ
वि करायोजी॥१॥ सेत्रुंज उधार साचलो। सोल मोटा श्रीकारोजी॥
असंख्यात वीजा वलि। तेन कुं अधिकारोजी। पुरनमो बीवन मा
रीयो। परभदिस। तिणवारोजी। से०३। सेत्रुंजानी जात्रा करी॥
सफल कीयो अवतारोजी। दंडवीरज राजा तणो। ए बीजो उधा
रोजि। से०४। सो सागरोपम व्यतिक्रम्यां। दंडवीरजनी जीवारोजी॥
इसाने इंद्र करावीयो। ए त्रीजो उधारोजी। से०५। चोथा देवलोक
नो धणी। माहेन्द्र नाम उधारोजी॥ तिण सेत्रुंजानो करावीयो॥ चो
थो उधारोजी। से०६। पांचमा देवलोकनो धणी। ब्रह्म इंद्र समकीत
धारोजी॥ तिण सेत्रुंजानो करावीयो॥ ए पांचमो उधारोजी। से०७॥
भवनपती इंद्रनो कीयो। ए छठो उधारोजी। चक्रवर्ती सगर तणो। 5

कीयो। ए सातमो उधारो जी। से० ८॥ अभिनंदन पासै सुणपो। सेत्रुं
जानो अधिकारो जी। व्यंतरीक इंद्रक रावीयो। ए आठमो उधारो
जी। से० ९॥ चंद्र सेखर प्रभु स्वामीनो पोतरो। चंद्र सेखर नाम मल्हा
रो जी। चंद्र जस राय करावीयो। ए नवमो उधारो जी। से० १०॥ सांती
नाथनी सुणि देसना। संति नाथ सुत सुकवी वारो जी। चक्र धरराय
करावीयो। ए दसमो उधारो जी। से० ११॥ दसरत सुत नोक रावी
यो जगदीपनो। मुनी सुव्रत स्वामी वारो जी। श्री रामचंद्र करावीयो।
ए इग्यारमो उधारो जी। से० १२॥ पांडव कहे च्यमे पापीया। कीम छू
टां मोरी माय रो जी। कहे कुंती सेत्रुंजा तणी। जात्रा कीयां पाप जा
यो जी॥ से० १३॥ पांचे पांडव सिध करी। सेत्रुंजो नेमीओ अपारो जी।
काष्ट चैत्य बीबलेपना। ए बारमो उधारो जी। से० १४॥ मंमाणीपा ५

बोरानी। अतिमा सुंदर सरूपो जी। श्री सेत्रुंजानो सिध करी। थ
पि सकल सरूपो जी। से० १५॥ छ सो सरसो वरसां गयां। विक्रम नृ
पथि जीवारो जी। पोरवाड जावड करावीयो। ए तेरमो उधारो
जि। से० १६॥ संवत बार सतोतरे। श्रीमा
ली सकवि वारो जी। बाहड दे मुंते करावीयो। ए चवदमो उधारो
जी। से० १७॥ संवत तेर एकोतरे। देसलहरी अधिकारो जी। समरो
सा दक रावीयो। ए पनरमो उधारो जी। से० १८॥ संवत पनर सत्या
सीये। वसाव दिस्क तवा रो जी। करमे दोसी करावीयो। ए
सोलमो उधारो जी। से० १९॥ सप्रती महाले सो लमो। ए वरतमान उधा
रो जी। नीत रवी जे वंदणा। पांमी जन वयारो जी। से० २०॥ इहा॥
वलि सेत्रुंज महात्म्य कुं। सांभलो जिम है तेम। सुरी धनेश्वर 6

३

मकदें। माहावीरकह्योछैएम ॥ १ ॥ जेहवोतेहवोदरसणी। देसे
त्रुंजभूजनीक। भगवंतनोछेसमांनतां ॥ लाभऊवेतहतीक ॥ २ ॥
श्रीसेत्रुंजाभपरे। चैत्यकरावैजेह ॥ दलपरमांणसमखदे ॥ प
ल्योपमस्कघतेह ॥ ३ ॥ सेत्रुंजाभरदेहरो। नवोनीपावैकोय। जीण
रोधारकरावतां। आठगूणोफलहोय ॥ ४ ॥ सिखपरमागरधरि ॥
सनात्रकरावैनार। चक्रवर्तिनी अस्त्रिपद। सिवसुखथ्यावैस
र ॥ ५ ॥ कातीपुनमसेत्रुंजेचढी एककरेउपवास। नारकीसो
सागरकै समो करकरमनोनास ॥ ६ ॥ कातिपरबमोटोकह्यो ॥
जिहांसीधादसकोड़ि द्राविडवालकहित्यादेपृथिनीछैको
नी ॥ ७ ॥ सहसलाखश्रावककनणी भोजनपुन्यविशेष सेत्रुंजेसाधू
पड़ीलाभतां। अधिकोतेहथिदेष ॥ ८ ॥ ढाल ॥ अनमत्यवंता सु ॥ ६ ॥

कमालन ॥ राखेड़ी ॥ सेत्रुंजमयांचाएवृदीयै। निजेकमलोयणएमो
जी। तपजपकीजैतिहांभूमि। तिर्थंकरकह्योतेमोजी। सेण १ ॥ जि
णसोनानीचोरीकरी। एकजोउपवासोजी। चैत्रिदिनसेत्रुंजचढी
एककरेउपवासोजी। सेण २ ॥ वसनचोरीजेकरी। सात आंमल
रूधकोथायोजी ॥ कातीसातदिनतपकीयां। रतनहरणपापजा
योजी। सेण ३ ॥ कांसीपीतलतांबारजतणी। चोरीकीधीजेणेजी
सातदिवसपुरमडकरे। तोछूटेगिरिराणोजी। ५४। सेण मो
तीप्रवालामुंगीया। जीणचोरत्यामनरनारोजी ॥ आंबलीकरदृजाकरै
तिणटंकशुधिआचारोजी। सेण ५ ॥ धांनपणीरसचोरीया। तेभेटें सि
द्धषेत्रोजी। सेत्रुंजतुलबदीसाधूनी ॥ पड़ीलाभेबड़विशेजी। सेण ६ ॥
वस्त्राभरणनिमचोरीया। तेउ ढ़सासेतोजी ॥ आदीनाथनी पूज

7

करे। पुहकवीवङ्कनेलोजी। सेण७। देवगुरुनोजोवन हरें॥ तेस
४ धा येणमोजी॥ अधिकोहव्यवरवेलीहो। पात्री याबेरकुवेमो।
जी। सेण८॥ गायनेसयोभामनी॥ गजगहचोरणदारोजी॥ बुटे
तेतपतीरथे॥ अरिहंतध्यानपकारोजी। सेण९। पूस्वकदेहरायारि
का॥ नीहांनिषेत्रपणोनामोजी। बुटेवमासितपकीया। सोमा
यकतिणठामोजी। सेण१०॥ कुंवारीयरिभ्राजकी॥ सीधवविधु
सनारोजी। वृतनोजेतनेकयो॥ वमासीतपसारोजी। सेण११॥ गो
विध२। स्त्री३। बालक४। रिषि५। एहनाघातिकजेहोजी। पलीमा
आगलआलोवतो। बुटेनपकरेतेहोजी॥ सेण१२॥ ढालह्र रिषव
सुपुजीयेजी॥ एदेसी॥ संवतीकापनसोलमोरा। एदरनवेभआरो। से
त्रुंजेजाशाकरुंसंए। सफलनकसंचावलाए। सेण१। व्रचारीपालतांम्व ॥७॥

। लीयेए। सेत्रुंजेकेरीवाट। सेणपालीतांणोपडुवियेए। सीधमीत्यो
बुकघाट। सेण२। पालीतांणोपडुवायेए। सिधगिरिसोवकुथावासे
ण३। जेलितसरोवरपेषीयेए। वलितलातीवानसेण॥ सिद्धांविस
मीनीलीयेए॥ वृथनेवधूतरेनामवियणसेण४॥ पादितणोपाजल
नीए। वनीयेनविपरजातिसेण सेत्रुंजेनंदीयसोहामणीए। दुर
थकीदेषतसेण६॥ वदिये हिंगुंलाजनेउमेद॥ कजीकुंभननमीयेए।
स। सेण। वारीमाहेपेसीयरा। आंणीचेगललास। सेण५। मरुदेवीटु
कमनोसरुए। गजवढि मरुदेवीमाय। सेण। शांतिनाथसोलम
ए। पूणमीजेतसुपाय। सेण। हावंसपोरवाडमेपरगनोए। मोमजी
साहमलार। सेण। रुपजीसिघकरावीयोए। चोमुषमुलनअ
धार। सेण७। चोमुषप्रतिमावरखीयेते। नमनतिमोहिनसामीव। से 8

॥ पांचेपांम वष्ठ जिएे ए। न्ह देवुद आदिवृंजंव॥ सेण॥ प्रतरव स
हिरांतसुए। विजुदारुं अनेक। सेण। नेमनाथसुवरीनमुए। रा
जुल गनदेम। सेण॥ धुर मंहाराज आदिनिसरुं ए। कगसीक
न्हुसीहर। सेण॥ श्रीउ आदिनाथ देहर ए। करमकरुं वकबुर॥
सेण॥ १०॥ मुल नायक थणमुमुदा ए॥ श्री आदिनाथ भगवंत। सेण॥
देहजु हारुं देहरए॥ नमती माहीनमंत। सेण॥ ११॥ सेत्रुंजे उपर किजी
यए। पांचेवांमस नात्र। सेण। कलस अगोहर सोकरी ए॥ निरम
ल निरकगात्र॥ सेण॥ १२॥ ववभ आदी सर आगले ए। पुंडरीक
गणधार। सेण। रायणतजिपगलानुलिए॥ शांतिनाथ सकश्कार॥
सेण॥ १३॥ रायणीतलिपगलानमुए। चोमुखवसी माव्यार। सेण। बीज
उभीबी वावली ए। पुंडरीक गणधार॥ सेण॥ १४॥ सकरजकं भनी ८

हालीए ए। अतिनलीनलबाजौल। सेण। चेलणातलाई सीधसि
ला ए। अंगफरसो वह्नोलन॥ सेण॥ १५॥ आदीपुर पाजें नरहूए। सि
द्धवड ल्युं विश्राम। सेण। वेदुवानिइणपरी करीए॥ सीधाबेबित
काज। सेण॥ १६॥ जात्राकरी सेत्रुंजातणी ए। सफलकीयो अवता
र। सेण। श्रसल वेमस आवीया ए। सिंघ सकपरिवार। सेण॥ १७॥ से
त्रुंजे रास सोहामणो ए। सांभलज्यो सहुकोय। सेण॥ गरबे गान
ठीं नावस कए। तस जात्रा फल होय॥ सेण॥ १८॥ नणसासली थीरुं
अतिनलो ए। दयावंतदातार। सेण। सेत्रुंजे सिघकराविया ए॥
जेसल मेर मकार। सेण॥ १९॥ सेत्रुंजे महात्म ग्रंथ मेतु। समस्त्यो
अनु [illegible] सार। सेण। नाव ममतावागतांअकां ए। पामीजे नवपा
र। सेण॥ २०॥ संवतसोलसत्यासीहेसा॥ भावरणसुदि सकशकार। सेण

9

रासज्ञणपो सेत्रुंजातणो ए। नगरनागोरमझार। से०॥२१॥ गिरुवे
गछ षरतरतणो ए। श्रीजीनचंदसूरीस। से० प्रथमतो प्रश्री
पुजनो ए। सकलचंदसकजगीस॥ से० २२॥ तासससीससजगजांणि
येंए॥ समयसुंदरसुवकाय। से०॥ रासज्ञणपोरलियांमणोए॥
सकलतालाजेणोदयाय॥ से० २३। इती श्री सेत्रुंजारोरास संपू
र्ण। लिखितं। कलासी मेदंनीपुरमध्ये॥१॥ संवत१८५४ वरषेमिति
मृगसरवदि ५ दीतवारे। श्रीकमलविजयजीरीप्रत उतारी छे॥१॥ ॥८॥